डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
महाकाली
साधना

महाकाली
पूजन प्रयोग

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

एस-सीरिज

संकलन – सम्पादन

श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक

मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान

डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर – 342001 (राजस्थान)

फोन : 0291–32209, फेक्स : 0291–32010

नवीन संस्करण	:	नव वर्ष 1998
प्रति	:	5000
मूल्य	:	15/–
कम्प्यूटर वर्क	:	श्रीमती कनक पाण्डेय, श्री सूरज कुमार डंगोल एवं सुश्री विजयलक्ष्मी
संयोजन	:	डॉ0 एस0 के0 बनर्जी, श्री राजीव गुप्ता
मुद्रक	:	सहारा इण्डिया मॉस कम्यूनिकेशनस्, नोएडा

पूज्य गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

अनुक्रम

परिज्ञानम् . . .

महाकाली जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना है और दस महाविद्याओं में श्रेष्ठतम महाविद्या है। यह जीवन को समृद्धिमय, ऐश्वर्यमय बनाने वाली, शत्रु संहारिणी, बाधा, अभाव, कष्ट, पीड़ा, तनाव, चिन्ता और समस्याओं को दूर करने वाली, जीवन को निरापद और आनन्दयुक्त बनाने वाली एकमात्र ऐसी देवी हैं, जो संन्यासियों के लिए भी सर्वाधिक पूज्य और आराध्य हैं; गृहस्थ व्यक्तियों के लिए भी यह आवश्यक, अनिवार्य और अद्वितीय महाविद्या है, जिसकी साधना, उपासना, सेवा और पूजा करना जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य और ध्येय है।

महाकाली के बारे में शास्त्रों में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जीवन को निरापद बनाने के लिए एकमात्र काली ही ऐसी शक्ति हैं, जो अपने-आप जीवन को पूर्ण सुरक्षित और उन्नतिशील बनाती हैं। पग-पग पर हमें बाधाओं, कष्टों और पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है। आकस्मिक संकट और राज्य भय से हरदम भयभीत रहना पड़ता है। चिंता व तनाव से जीवन घुल जाता है, रोग से जीवन जर्जर हो जाता है, घर में कलह और अशांति की वजह से असमय बुढ़ापा और विविध समस्याएं आकर हमें घेर लेती हैं। ऐसे समय में अन्य किसी देवता की उपासना इतनी फलप्रद सिद्ध नहीं होती, जितनी कि महाकाली की उपासना अपने-आप में फलप्रद और सुखदायक होती है।

कई साधकों को यह भ्रम है, कि महाकाली एक तीक्ष्ण देवी है और इसकी साधना में कोई भी त्रुटि रह जाती है, तो विपरीत परिणाम भोगने को तत्पर रहना चाहिए या विपरीत परिणाम भोगने को मिल जाता है। जबकि ऐसी बात नहीं है, महाकाली अत्यन्त सौम्य और सरल महाविद्या हैं, जिनका रूप भले ही विकराल हो, गले में भले ही नरमुण्ड की मालाएं पहनी हुई हों, लाल-लाल आंखें और बिखरे हुए बाल हों, भगवान शिव की छाती पर पैर रखे हुए खड़ी हों, जिनके हाथों में खड्ग और आयुध हों, मगर इसके बावजूद भी उनके हृदय में करुणा, दया, ममता, स्नेह और अपने साधकों के प्रति अत्यधिक ममत्व है। ऐसी महाविद्या, ऐसी देवी तो अपने-आप में सर्व सौभाग्यदायक कही जाती हैं, जिनकी उपासना और साधना ही जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है।

यदि किसी कारणवश महाकाली साधना में न्यूनता रह जाय या किसी दिन मंत्र जप नहीं हो सके या अनुष्ठान में किसी प्रकार की बाधा आ जाय, तो उसका कुछ भी विपरीत परिणाम भोगने को नहीं मिलता, अपितु जो कुछ भी आपने किया है, उसका फल तो आपको मिलता ही है; इसलिए महाकाली साधना तो अपने-आप में उतनी ही आनन्दप्रद है, जितनी

कि मां की गोद, जितना मां का ममत्व, जितना मां का स्नेह, जितनी मां की सामीप्यता। इसलिए भक्तों ने और साधकों ने महाकाली को "मां" शब्द से सम्बोधित किया है।

"कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति"

शंकराचार्य की यह उक्ति महाकाली पर पूर्णरूप से लागू होती है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है, कि बेटा कुपुत्र हो सकता है, निर्लज्ज हो सकता है, झूठा हो सकता है, असत्य हो सकता है, छलमय हो सकता है, किन्तु 'कुमाता न भवति' फिर भी मां कुमाता नहीं हो सकती, क्योंकि उसके हृदय में तो पुत्र के प्रति वात्सल्य, प्रेम बना ही रहता है, चाहे पुत्र कितना ही बड़ा क्यों न हो जाय!

मैंने, सैकड़ों साधकों ने, योगियों ने और यतियों ने यह अनुभव किया है, कि यदि जीवन में महाकाली साधना नहीं होती, तो जीवन अपने-आप में रसहीन हो जाता; यदि जीवन में धन, ऐश्वर्य, भोग, विलास, सौभाग्य प्राप्त करना है और शत्रु बाधा, कष्ट, पीड़ा व रोग इन सभी से मुक्ति प्राप्त करनी है, तो उन लोगों के लिए केवल एकमात्र उपाय महाकाली साधना ही है। जो एक बार महाकाली साधना सम्पन्न कर लेता है, उसके लिए अन्य दूसरी साधना करने की आवश्यकता ही नहीं रह पाती, क्योंकि वह अपने आप में पूर्ण साधना है। "भोगं च मोक्षं च करस्थ एव" भोग और मोक्ष दोनों को प्रदान करने वाली अगर किसी साधना को हम कहें, तो वह महाकाली साधना ही है।

यद्यपि महाकाली साधना पर कई ग्रन्थ लिखे हुए हैं, 'मंत्र महार्णव' है, 'मंत्र महोदधि' है, 'मंत्र चैतन्य' है, 'मंत्र मंथन' है– इन सभी ग्रन्थों में महाकाली के रूपों और साधनाओं का वर्णन है, किन्तु साधना तो वही सही होती है, जिसे हम स्वयं अनुभव करें। पोथियों में लिखी हुई बातों पर यकीन करने से साधनाओं में सफलता नहीं मिल पाती– हो सकता है, कि किसी समय इन साधनाओं से किसी को सफलता मिली हो; परन्तु मुझे किस साधना से, किस युक्ति से, किस तरकीब से सफलता मिलेगी, वह मेरे लिए ज्यादा उपयुक्त है। आज पूरे भारतवर्ष में सैकड़ों ऐसे लोग हैं, जो केवल उस लकीर के फकीर बने हुए हैं, जो कुछ पोथियों में लिखा है; उन्होंने अपने जीवन में अनुभव नहीं किया।

– और जिसने अनुभव किया, वह थोड़ा सा परे हट कर कुछ लिख देता है, तो सभी अपने-आप में विचलित और बेचैन हो जाते हैं, क्योंकि उनके अहम् पर ठोकर जो लग जाती है। मगर मुझे जो कुछ युक्ति, जो कुछ तरकीब, जो कुछ क्षमता, जो कुछ ज्ञान, जो कुछ चैतन्यता गुरुदेव ने दी है, मैंने उसी प्रकार से साधना को सम्पन्न किया और साधना को इस तरीके से सम्पन्न करने पर पहली ही बार में मुझे सफलता मिल गई। मेरे लिये यह आश्चर्य की बात थी, कि अन्य साधनाएं चार-चार बार, छः-छः बार करने पर भी सफलता प्रद नहीं हो रही थीं, वहीं महाकाली साधना पहली ही बार में सफल हो गई।

इसका मूल कारण यह था, कि गुरुदेव ने स्वयं इस महाकाली को उस रूप में सम्पन्न किया, जो कि उन पुस्तकों से कुछ हटकर हैं। जो उनका अनुभव गम्य है। इस साधना को उन्होंने अपने संन्यासी शिष्यों को सिद्ध करवाया था और वही मंत्र, वही साधना उन्होंने मुझे भी दी।

इस पुस्तक में भी उसी मंत्र, उसी साधना का पूर्णता के साथ समावेश है और इसलिए इस पुस्तक की महत्ता अन्य ग्रंथों की अपेक्षा लाख-लाख गुना बढ़ जाती है। यह ग्रंथ एक छोटी सी पुस्तक के कुछ पन्नों का संग्रह मात्र नहीं है, अपितु आपके जीवन की एक अमूल्य धरोहर है। मैं इसके लिए अपने गुरुदेव के प्रति समर्पित हूं, कि उन्होंने इस गुह्य साधना को पूर्णता के साथ मुझे दिया, जिसे सम्पन्न कर मैंने सफलता प्राप्त की।

इस दृष्टि से कहा जाय, तो यह छोटी सी पुस्तक अपने-आप में दस हजार पन्नों के ग्रंथों से भी ज्यादा मूल्यवान और महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें जो भी साधना अंकित है, वह अपने-आप में 'पोथिन देखी' नहीं अपितु 'आंखिन देखी' है, अनुभव गम्य है, जो कुछ अनुभव किया है, उसी को इस पुस्तक में संजोया है।

मेरा अनुभव तो यह है, कि हम चाहे शैव हों, चाहे वैष्णव हों, चाहे शाक्त हों अथवा किसी भी धर्म को मानने वाले हों, किन्तु यदि हमारे जीवन में महाकाली साधना नहीं है, तो जीवन अपने-आप में अपूर्ण और न्यून है। हमारे जीवन में यदि महाकाली का स्वरूप अंकित नहीं है, तो जीवन भयग्रस्त है। यदि हमें महाकाली का मंत्र स्मरण नहीं है, तो हम हर समय भय से आक्रांत रहते हैं। इन सभी दृष्टियों से यह मंत्र, यह साधना, यह विधि, यह पुस्तक अपने-आप में पूर्ण श्रेष्ठ, अद्भुत और तेजस्वी है।

इस पुस्तक को आपके हाथों में देते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। आप में से प्रत्येक इस साधना को सम्पन्न करें, आप खुद देखेंगे कि आपको पहले ही दिन से कितनी अनुकूलता प्राप्त होती है। यह एक ऐसी विशिष्ट क्रिया है, जिसके माध्यम से आदमी एकदम से उस ऊंचाई पर पहुंच जाता है, जहां पहुंचने में कई वर्ष लगते हैं। यह एक ऐसी साधना है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है— वह चाहे अमीर हो, चाहे गरीब हो।

पूज्यपाद गुरुदेव का जो आशीर्वाद मुझे प्राप्त हुआ है, उसके लिए तो मेरा रोम-रोम उनका ऋणी है; मैं हजार-हजार जन्म लेकर भी उनके ऋण को नहीं उतार सकता, मैं भक्तिभाव से उनको प्रणाम करता हूं। इस पुस्तक के माध्यम से प्रत्येक शिष्य, पाठक, साधक व गुरुभाई को समझाने का मेरा यह प्रयत्न है, कि हमारे जीवन का आधार "महाकाली साधना" है और इस नवीनतम साधना विधि को अपनाकर आप अपने जीवन को पूर्णता दे सकेंगे।

या कालिका रोगहरा सुवन्द्या,
वश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च;
सा देवमाता मयी सौख्यदात्री।।

अर्थात्– "समस्त रोगों को दूर करने वाली, जगत् वन्दनीय, विनम्र तथा दक्ष भक्तों के द्वारा पूजनीय, साधकों के भय का नाश करने वाली, सभी को सुख देने वाली, देव जननी भगवती काली हमारी रक्षा करें।"

भगवती काली का वर्णन प्रत्येक विज्ञजन ने अपनी भावनानुसार किया है। कोई उन्हें कृष्णवर्णा बताता है, तो कोई उन्हें रक्तवर्णा। "महानिर्वाण तंत्र" के अनुसार काली का वर्ण काला बताया गया है, जिस प्रकार काले रंग में प्रत्येक रंग चाहे वह श्वेत हो, पीत हो, नील हो आपस में समाहित हो एकमात्र काले रंग के ही प्रतीत होते हैं, ठीक उसी प्रकार विश्व के प्रत्येक जीव का समाहितीकरण– चाहे वह किसी भी वर्ण का हो, काली में हो जाता है। विश्व के समस्त प्राणियों का लय काली में होना माना गया है, अतः शास्त्राकारों ने निराकार, निर्गुणा, कालशक्ति भगवती काली का रंग काला ही निरूपित किया है। अस्तु, साधकों को भगवती काली की साधना करने में कृष्ण वर्ण अर्थात् काले रंग के शरीर की ही भावना अपने मन-मस्तिष्क में रखनी चाहिए।

"अञ्जनाद्रिनिभां देवीं श्मशानालय वासिनीं" आद्याकाली का निवास स्थान श्मशान बताया गया है, किन्तु लौकिक भाषा में श्मशान वह स्थल है, जहां मृत प्राणियों को जलाया जाता है। यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है, कि भगवती काली का निवास स्थान श्मशान क्यों निर्धारित किया गया है!

श्मशान के गूढ़ार्थ को अगर समझा जाय, तो उपरोक्त जिज्ञासा का समाधान प्राप्त हो जाता है। गूढ़ार्थ के अनुसार— "श्मशान वह स्थल है, जहां पञ्च पदार्थों से निर्मित देह को भस्म कर दिया जाता है, जिससे वे पदार्थ प्रकृति के साथ एकाकार हो जायें। इस प्रकार पंच महाभूतों का लय "चिन्मय ब्रह्म" में होता है। मां काली ब्रह्म स्वरूपा हैं, अतः श्मशान वह स्थल है, जहां पंचमहाभूत लीन हो जाते हैं।"

सांसारिक मनुष्य के लिए श्मशान की अवधारणा उसके हृदय स्थल के लिए की गई है, क्योंकि मानव को पतनोन्मुख करने वाले विषय-विकार, काम-क्रोधादि के भस्म होने का स्थान मानव हृदय ही होता है, और चूंकि श्मशान वह स्थान है, जहां पदार्थ भस्म हो जाते हैं, इस प्रकार साधक के विकार शून्य हृदय रूपी श्मशान में ही भगवती महाकाली का निवास होता है। अस्तु, महाकाली के साधकों को चाहिए, कि वे साधना प्रारम्भ करने से पूर्व अपने हृदय को श्मशान बना लें और सभी विषय-विकारों से स्वयं को पूर्णतः मुक्त कर लें।

महाकाली चित्तशक्ति में निहित प्राणरूपी शवासन पर आरूढ़ित हैं। जब 'शिव' से शक्ति पृथक हो जाती है, तो शिव भी 'शव' हो जाते हैं, अर्थात् मानव शरीर जो शिव का अंश रूप है, इसमें से जब प्राणशक्ति पृथक हो जाती है, तो वह मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाता है और उसका शरीर 'शव' मात्र रह जाता है। इसी प्रकार काली का साधक जब अपनी प्राणशक्ति चित्तशक्ति में तिरोहित कर देता है, तो उसका पंचभूतात्मक देह प्राणशक्ति विहिन हो जाने के कारण 'शव' हो जाता है, जिस पर आद्याशक्ति महाकाली आरूढ़ हो जाती हैं और

अपने साधक को स्वयं में एकीकृत कर, उसको अहैतु की कृपा प्रदान कर समस्त जागतिक प्रपंचों से मुक्त कर देती हैं। इस प्रकार भगवती काली का आसन 'शव' निरूपित किया गया है।

काली का स्वरूप

भगवती के ललाट पर अमृत्व रूपी चन्द्रमा सुशोभित है, अतः काली के साधक को अमृतत्व की प्राप्ति होती है। वे मुक्तकेशी होने के कारण केश विन्यास से रहित त्रिगुणातीता हैं। सूर्य, चन्द्र और अग्नि ये भगवती के तीन नेत्र हैं, जिनके कारण वे समस्त लोकों व समस्त कालों को देखने में समर्थ हैं। जिस प्रकार सिंह की गर्जना से भयभीत हो वन्य पशु भाग जाते हैं, उसी प्रकार महाकाली का नाम सुनते ही समस्त पाप-दोष पलायित हो जाते हैं। भगवती ने अपने कान में बालकों के शव कुण्डलवत् पहन रखे हैं। इस कथन का तात्पर्य है, कि वे सदैव अपने बाल सुलभ हृदय वाले साधकों की प्रार्थना को सुनती हैं और उनकी मनःइच्छा को पूर्ण करती हैं।

भगवती काली ने अपने सतोगुण रूपी उज्ज्वल दांत से (जो बाहर निकले हुए हैं) अपनी जीभ (जो तमो गुण व रजो गुण प्रधान होती है) को दबा रखा है। उनके होंठ के दोनों कोनों से रक्तधारा बह रही है, दूसरे शब्दों में वे शुद्ध सत्वात्मिका हैं और साधकों के अंदर निहित 'रजो' व 'तमो' गुण को निःस्रत कर उन्हें भी शुद्ध-सात्विक बना देती हैं। आद्या के मुख पर सदैव मुस्कान बनी रहती है, अर्थात् वे नित्यानन्दमयी हैं। सम्पूर्ण विश्व को आहार प्रदान करने में सक्षम हैं तथा अपने साधक को मोक्ष रूपी दुग्ध का पान कराने के कारण उन्नत पीनपयोधरा हैं। भगवती का कण्ठ पचास मुण्डों की माला से शोभित है, ये पचास मुण्ड पचास मातृका वर्ण के प्रतीक हैं, जिन्हें धारण करने से वे ब्रह्म स्वरूपा हैं। उन शब्द-मुण्डों से टपकता रजोगुण रूपी रक्त सृष्टि उत्पत्ति का प्रतीक है अर्थात् भगवती काली निरन्तर नवीन सृष्टि करती रहती हैं।

उन्हें दिगम्बरा कहा गया है, जिसका आशय है कि वे माया जनित आवरण से रहित हैं। उन्होंने शव के हाथों की करधनी धारण कर रखा है, जो इस बात का प्रतीक है, कि जीव अपने स्थूल शरीर को त्याग कर, सूक्ष्म रूप से काली के साथ तब तक संलग्न रहते हैं, जब तक कि उन्हें मोक्ष प्राप्त नहीं हो जाता है।

भगवती ने अपने ऊपरी बायें हाथ में ज्ञान रूपी तलवार धारण कर रखी है, जिसके द्वारा वे अपने साधक के मोहरूपी मायापाश को काट देती हैं। उन्होंने अपने नीचे वाले बायें हाथ में नरमुण्ड धारण कर रखा है, जिसका तात्पर्य है, कि वाम मार्ग की निम्नतम मानी जाने वाली साधना की क्रियाओं में रत अपने साधक के मस्तिष्क में वे तत्त्व रूपी ज्ञान को आरोपित करती हैं।

भगवती ने अपने दोनों दायें हाथों में अभय तथा वर मुद्रा धारण कर रखे हैं अर्थात् वे अपने दक्षिण मार्ग के शुद्ध-सात्विक साधक को निर्भयता तथा वर प्रदान कर उनकी अभिलाषाओं को पूर्ण करती हैं।

वे महाकाल को भी शक्ति प्रदान करने वाली विराट भगवती हैं, तात्पर्यतः भगवती महाकाल के साथ 'सुरत' में संलग्न हैं, अतः जब वे निर्गुणा होती हैं, तो महाकाल उन्हीं के तद्रूप हो जाते हैं, और जब वे सगुणा होती हैं, तो महाकाल से मुक्त हो जाती हैं, इस प्रकार वे स्थिति क्रम में 'सुरता' तथा सृष्टि क्रम में 'विपरीत रता' कही जाती हैं।

भगवती आद्या पर काल का प्रभाव न पड़ने के कारण उनके शरीर में अवस्था सम्बन्धी कोई परिवर्तन नहीं होता है, फलस्वरूप वे नित्य यौवनवती बनी रहती हैं। इस प्रकार 'सर्वकाम समृद्धिदायिका भगवती काली' जो ब्रह्मा, विष्णु द्वारा भी वन्दित हैं, प्रत्येक देवता व राक्षस भी जिनके सम्मुख नतमस्तक हैं, ऐसी भगवती शिवा का ध्यान करना चाहिए।

काली के भेद

मार्कण्डेय पुराण के दुर्गा सप्तशती खण्ड के आठवें अध्याय के अनुसार भगवती काली की उत्पत्ति जगत जननी जगदम्बिका के ललाट से वर्णित की गयी है, तथापि भगवती काली के असंख्य रूप भेद हैं। वस्तुतः समस्त दैवी शक्तियां, योगिनियां आदि भगवती की प्रतिरूप स्वरूपा हैं, फिर भी प्रमुखतः इनके आठ स्वरूप माने गये हैं— १. चिन्तामणि काली, २. स्पर्शमणि काली, ३. सन्ततिप्रदा काली, ४. सिद्धि काली, ५. दक्षिण काली, ६. कामकला काली, ७. हंस काली एवं ८. गुह्य काली।

इनके अतिरिक्त 'भद्र काली','श्मशान काली' तथा 'महाकाली' इन तीनों भेदों की प्रमुखता से साधकों द्वारा आराधना की जाती है। भगवती काली के अनेक भेद हैं, उनमें दस महाविद्यान्तर्गत प्रथम महाविद्या भगवती को माना गया है, जो परब्रह्म शिव की परमशक्ति, साक्षात् ब्रह्मस्वरूपा, अनादि एवं अनन्ता हैं। 'सप्तशती' में भगवती आद्या काली के अवतार का ही वर्णन है। काली के अनेक रूप भेदों में 'दक्षिणा काली' स्वरूप सद्यः फलप्रद कहा गया है। इस रूप को 'दक्षिणा कालिका' नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

दक्षिणा कालिका के ही प्रकारान्तर से चार स्वरूप निर्धारित किए गये हैं। ये स्वरूप हैं— गुह्य काली, भद्र काली, श्मशान काली तथा महाकाली। दक्षिणा काली को ही भगवती काली, अनादि रूपा, आद्या विद्या, ब्रह्म स्वरूपिणी तथा कैवल्य दात्री भी कहा गया है। शास्त्रों के अनुसार भगवती काली आद्या शक्ति, चित्त शक्ति के रूप में विद्यमान होने के कारण अनादि, अनन्त, अनित्य व सबकी स्वामिनी हैं। वेद में काली की स्तुति "भद्र काली" नाम से की गयी है।

विभिन्न शास्त्रों में काली की साधना-उपासना विभिन्न नामों से की गई है। नाम-भेद होने के बाद भी ये सभी नाम एवं स्वरूप एकमात्र दक्षिणा काली के ही हैं, जो निराकार होते हुए भी अपने

साधकों की भावनाओं के अनुसार साकार रूप में उपस्थित होकर, उनको मुक्ति प्रदान कर उन्हें अभिलषित लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ बनाती हैं, अतः निराकार होते हुए भी वे साकार हैं, अदृश्य होते हुए भी दृश्यमान हैं।

भगवती का नाम दक्षिणा काली क्यों पड़ा तथा 'दक्षिणा काली' शब्द का भावार्थ क्या है? इस सम्बन्ध में शास्त्रों में प्रायः विभिन्न मत दृष्टिगत होते हैं—

'निर्वाण तंत्र' के अनुसार—

दक्षिणस्यां दिशि स्थाने संस्थितश्वत खेः सुतः।
काली नाम्ना पलायेत भीति युक्तः समन्ततः।।
अः सा दक्षिणा काली त्रिषु लोकेषु गीयते।।

अर्थात्— "काली साधक के द्वारा उच्चरित 'काली' शब्द का श्रवण मात्र करने से ही सूर्य पुत्र "यम" भयभीत होकर पलायन कर जाते हैं। वे काली साधक को नरकगामी नहीं बना सकते, इसी कारण भगवती को 'दक्षिणा काली' कहते हैं।"

अन्य शास्त्रों के अनुसार इस सम्बन्ध में निम्न मत प्राप्त होते हैं—

★ धार्मिक कार्य सम्पन्न होने पर "दक्षिणा" फल प्रदायक होती है, उसी प्रकार देवी भी सभी कर्म-फलों की सिद्धि प्रदान करने के कारण दक्षिणा काली हैं।

★ भगवती काली की सर्वप्रथम आराधना दक्षिणामूर्ति भैरव ने की थी, इस कारण भी भगवती को दक्षिणा काली कहते हैं।

★ सृष्टि क्रम में पुरुष को 'दक्षिण' तथा नारी को 'वाम' कहते हैं। भगवती काली, जो नारी होने के कारण वामा हैं, वे दक्षिणा (पुरुष) पर विजय प्राप्त कर महा मोक्ष प्रदायिनी बनीं, अतः दक्षिणा काली कही गई हैं।

काली महात्म्य

भगवती काली की साधना करने वाले साधक को निम्नलिखित लाभ स्वतः प्राप्त होने लग जाते हैं–

★ काली की उपासना से साधक के जीवन के समस्त विघ्न ठीक उसी प्रकार समाप्त हो जाते हैं, जैसे कि अग्नि के सम्पर्क में आकर पतंगे भस्म हो जाते हैं।

★ काली स्तोत्रों का नियमित पाठ करने वाले साधक की वाणी में अजस्र प्रवाह व्याप्त हो जाने के कारण उसे गद्य-पद्य सभी पर पूर्ण अधिकार प्राप्त हो जाता है।

★ काली साधना सम्पन्न व्यक्ति के अन्दर अत्यधिक तेजस्विता स्वतः व्याप्त हो जाने के कारण प्रतिवादी निष्प्रभ हो जाते हैं।

★ दस महाविद्याओं में प्रथम स्थान महाकाली का है, अतः इनकी साधना सम्पन्न करने वाले साधक को सुगमता से सभी सिद्धियां हस्तगत हो जाती हैं।

★ भगवती काली अपने साधकों पर सदैव परम स्नेह रखने वाली तथा उनका कल्याण करने वाली हैं।

★ भगवती काली के मंत्र का अनुष्ठान यदि साधक पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति युक्त होकर करता है, तो उसे चतुर्वर्ग की प्राप्ति होती है तथा भगवती का सायुज्य भी प्राप्त होता है।

★ काली साधक समस्त लोकों को वशीभूत करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

★ भगवती अपने साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण कर उसें श्री, सम्पन्नता तथा श्रेष्ठता प्रदान करती हैं तथा साधक के घर में कुबेरवत् अक्षय भण्डार बना रहता है।

★ काली की साधना करने वाले साधक समस्त रोगों से मुक्त होकर

पूर्ण स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हैं तथा पूर्ण युवा एवं दीर्घायु होते हैं।

★ काली महाविद्या त्रिभुवन में अत्यन्त दुर्लभ चारों पुरुषार्थों को देने वाली, महापापों को नष्ट करने वाली, सनातनी तथा समस्त भोगों को प्रदान करने वाली हैं।

काली की उत्पत्ति

काली का तात्पर्य है– "काल" की पत्नी। काल भगवान शिव को कहते हैं और इस प्रकार भगवान शिव की पत्नी 'जगदम्बा' ही काली हुईं, अतः उत्पत्ति के आधार पर देखें, तो काली अजन्मा तथा आदि दैवी शक्ति हैं। भगवती काली की कृपा से ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवता, ऋषि, मुनि तथा दैत्यादि सिद्धियां प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। ये उनसे ही उत्पन्न होकर उनमें ही लीन हो जाते हैं।

मार्कण्डेय पुराण में वर्णन आता है, कि एक बार महाबलशाली दो दैत्य शुम्भ एवं निशुम्भ ने युद्ध में देवराज इन्द्र को परास्त कर उनका राज्य एवं उनके सभी अधिकार उनसे छीन लिए। तत्पश्चात् उन दोनों दैत्यों ने एक-एक कर, सभी देवताओं को परास्त कर, उन्हें स्थान च्युत कर दिया। निष्कासित देव अपनी प्राण रक्षा व सम्मान रक्षा के लिए अपराजिता देवी का आवाहन करने लगे, क्योंकि इसके पूर्व देवताओं के आवाहन पर ही देवी ने महिषासुर का वध करके उन्हें यह वरदान दिया था, कि आपत्तिकाल में जब भी मेरा स्मरण करोगे, मैं तुम्हारे समस्त महान संकट क्षण भर में दूर कर दूंगी।

यही स्मरण कर सभी देवता पर्वतराज हिमालय पर पहुंच कर विष्णु माया भगवती की स्तुति करने लगे। समस्त देवता जब विपत्ति नाश के लिए भगवती की स्तुति कर रहे थे, उसी समय श्री पार्वती गंगा स्नान के लिए आयीं और देवताओं से पूछा– "आप लोग किसकी प्रार्थना कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं?"

उस समय पार्वती के शरीर कोश से प्रकट होकर शिवा बोलीं– "ये देवता शुम्भ दैत्य से मुक्ति हेतु मेरी प्रार्थना कर रहे हैं।"

देवी के कोश से शिवा (अम्बिका) का प्राकट्य हुआ, अतः उन्हें "कौशिकी" नाम से भी जाना जाता है। कौशिकी के प्रकट होने से पार्वती जी काली रूप हो गईं और "कालिका" नाम से विख्यात हुईं।

हिमालय में परम सुन्दर रूप धारण कर विचरण करती अम्बिका देवी को शुम्भ-निशुम्भ के चर चण्ड-मुण्ड ने देखा और जाकर शुम्भ से उनकी रूप की प्रशंसा कर, उन्हें अपनी पाणिग्रहिता बनाने के लिए प्रार्थना की।

चण्ड-मुण्ड के वचन सुनकर शुम्भ ने महाअसुर को अपना दूत बनाकर देवी के पास भेजा और अपने पास आने के लिए निमन्त्रण दिया। महाअसुर ने शुम्भ की आज्ञानुसार दैत्यराज की प्रशंसा की और विवाह करने का परामर्श दिया। दूत की बात सुनकर देवी ने कहा– "तुमने जो भी कहा शुम्भ और निशुम्भ उतने ही पराक्रमी होंगे, किन्तु उनका प्रस्ताव मैं स्वीकार नहीं कर सकती, क्योंकि मैंने यह प्रतिज्ञा ले रखी है, कि जो मुझे युद्ध में परास्त कर मेरे अभिमान को तोड़ देगा, वही मेरा भर्ता बन सकता है।"

देवी के ऐसे वचन सुनकर क्रोध से परिपूर्ण महाअसुर दैत्यराज के पास आया और सारा वृत्तान्त कह सुनाया। दूत के वचन सुनकर दैत्यराज अत्यन्त क्रोधोन्मत्त हो उठा और धूम्रलोचन को साठ हजार असुर सैन्य के साथ भेज दिया। धूम्रलोचन तथा उसकी सेना को देवी तथा उनके सिंह ने समाप्त कर दिया। देवी के द्वारा धूम्रलोचन तथा उसकी सम्पूर्ण सेना का विनाश सुनकर उसने चण्ड-मुण्ड को विशाल सेना देकर भेजते हुए कहा– "देवी व उसके सिंह को मारकर, अम्बिका को बांधकर मेरे पास लाओ।"

आज्ञा पाते ही चण्ड-मुण्ड आदि दैत्य विविध आयुधों से सज्जित चतुरंगिणी सेना के साथ देवी को पकड़ने की चेष्टा करने लगे।

अम्बिका अत्यधिक क्रोध में आ गईं। क्रोध के कारण उनका मुख काला पड़ गया, देवी के माथे पर भौंहें कुटिल होकर तन गईं. . . और तब भयानक मुख वाली काली देवी तलवार तथा पाश लिए प्रकट हो गईं। वे बड़े वेग से दैत्य सेना पर टूट पड़ीं, और उन्हें मारकर उनका भक्षण करने लगीं, इस प्रकार काली ने दुरात्मा असुरों की सेना कुचल डाली और घोर गर्जना करती हुई कुपिता काली ने चण्ड और मुण्ड को भी मार डाला। चण्ड-मुण्ड को मारने के कारण काली की ख्याति 'चामुण्डा' के रूप में भी हुई।

चण्ड-मुण्ड के मारे जाने की सूचना पाकर असुरराज शुम्भ अत्यधिक क्रोधित होकर उदायुध, कम्बु, कालिक, मौर्य, दौर्हृद, कालकेय आदि असुरों तथा अपनी सम्पूर्ण सेना के साथ प्रस्थान किया और देवी, सिंह तथा काली को चारों ओर से घेर कर उन पर घातक प्रहार करने लगे।

अत्यन्त क्रोधित होकर काली ने अपना मुंह खूब फैला कर घोर गर्जना की। उसी समय दैत्यों के नाश के लिए तथा देवताओं के विकास के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कार्तिक आदि देवों की शक्तियां अत्यन्त पराक्रम एवं दिव्यायुधों से सम्पन्न होकर चण्डिका के पास आ गईं, और तब अत्यन्त दिव्य शक्तियों से समन्वित काली दैत्य सेना का संहार करने लगीं। इस प्रकार के महाविनाश को देख कर असुर भागने लगे, उन्हें भागता देखकर सेनापति रक्तबीज अत्यन्त क्रोधित होकर युद्ध करने के लिए आया। रक्तबीज के शरीर से एक भी रुधिर की बूंद पृथ्वी पर गिरते ही उसी के समान बलवान दूसरा असुर उत्पन्न हो जाता। देवी की ऐन्द्री शक्ति ने उस पर वज्र से ताड़ना की, वज्र लगते ही उसके शरीर से बहुत सा रुधिर बहने लगा और अनेकों रक्तबीज के समान पराक्रमी योद्धा प्रकट होने लगे।

दैत्य के रुधिर से उत्पन्न उन असुरों से सारा जगत व्याप्त हो गया और देवता अत्यन्त भयग्रस्त हो गये, देवताओं को भयभीत देख

देवी ने काली से कहा— "हे चामुण्डे! तुम अपना मुख विस्तार से फैला दो और मेरे शस्त्रापात से गिरते हुए रुधिर बिन्दुओं तथा बिन्दुओं से उत्पन्न महादैत्यों को अपने वेगवान मुख द्वारा खाती जाओ। युद्ध भूमि में रुधिरोत्पन्न इन महान दैत्यों का भक्षण करती हुई तुम घूमती रहो, तभी इन दैत्यों का नाश होगा, क्योंकि तुम्हारे द्वारा खाये जाने पर नये दैत्य पैदा नहीं होंगे।"

तत्पश्चात् देवी ने त्रिशूल से रक्तबीज पर प्रहार किया और काली ने तत्परता से रक्तबीज के रुधिर को मुख में ग्रहण कर लिया। इस प्रकार देवी ने शूल, वज्र, बाण, तलवार आदि आयुधों से रुधिरहीन महाअसुर रक्तबीज को मार डाला। अस्तु, रक्तबीज के संहार से समस्त देव अत्यन्त प्रसन्न हुए।
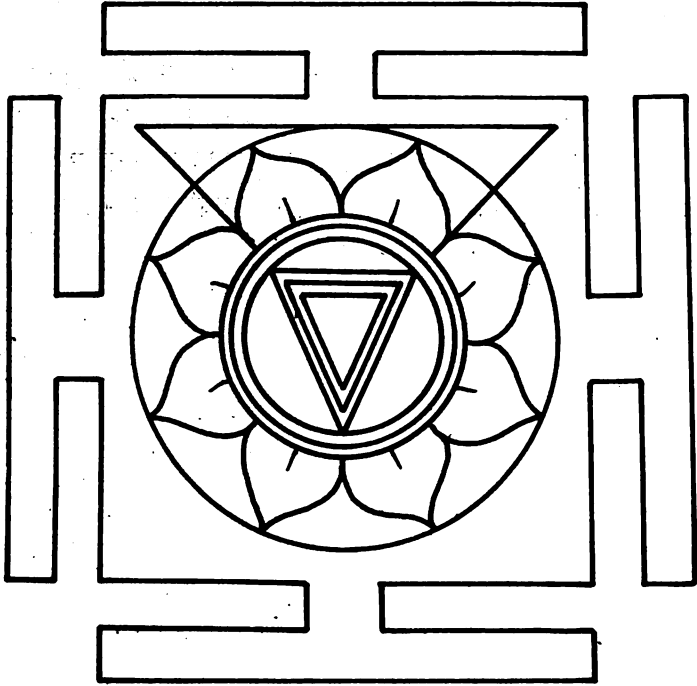
काली यंत्र

महाकाली पूजन

प्रत्येक साधना काल में साधक को ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए, क्योंकि शान्त, सुरम्य एवं शीतल मन्द, सुगन्धित वायु से सुरभित वातावरण ही साधनोपयोगी होता है। शय्या में ही बैठे-बैठे अपने शिरो-देश में **सहस्रदल कमल कर्णिकामध्यस्थितं, द्विभुजं वराभयकरं श्वेतमाल्यानुलेपनं, स्वप्रकाशरूपं स्ववामस्थितं, सुरक्त भक्तया स्वप्रकाशरूपया भगवत्या सहितं** गुरु-ध्यान करें। इसके बाद मानसिक पूजा करके प्रणामांजलि समर्पित करें—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

इसके बाद शौच-स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध-धौत (सफेद)

वस्त्र धारण करके, पवित्र आसन पर बैठ जायें, सामने चौकी पर कपड़ा बिछाकर भगवती काली का चित्र व यंत्र स्थापित करें। गुरु चित्र भी स्थापित करना चाहिए।

पवित्रीकरण :

बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अंगुलियों से अपने ऊपर जल छिड़कें, तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ अपवित्रः अपवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

आचमन :

फिर आचमनी से जल लेकर तीन बार जल पीयें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ महाकाल्यै नमः क्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः।
ॐ महाकाल्यै नमः ऐं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः।
ॐ महाकाल्यै नमः ह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः।

दिग् बन्धन :

बायें हाथ में चावल लेकर दायें से ढक कर निम्न मंत्रों का उच्चारण करें—

अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे।।

बायें हाथ में रखे हुए चावलों को निम्न मंत्रोच्चार करते हुए सभी दिशाओं में उछाल दें—

ॐ प्राच्यै नमः	पूर्व दिशा में।
ॐ प्रतीच्यै नमः	पश्चिम दिशा में।
ॐ उदीच्यै नमः	उत्तर दिशा में।
ॐ अवाच्यै नमः	दक्षिण दिशा में।
ॐ ऊर्ध्वाय नमः	ऊपर की ओर।
ॐ पातालाय नमः	नीचे की ओर।

गणपति स्मरण :

दोनों हाथ जोड़ कर गणपति का स्मरण करें, जो विघ्नविघातक हैं और साधना में आने वाली समस्त बाधाओं को दूर करने वाले हैं—

गजाननं भूतगणाधि सेवितं,
कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाश कारकं;
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।।

भगवान गणपति अपने सभी गणों के अधिपति हैं, सुस्वादु फलों का भक्षण करने वाले हैं तथा साधकों के शोक और संताप को दूर करने वाले हैं, उनके चरणों में मैं नमन करता हूं।

गुरु पूजन

अक्षत, पुष्प एवं गन्ध आदि से संक्षिप्त गुरु पूजन करके साधना में सफलता के लिए दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

पूर्णो स वातं गुरुर्वै प्रणम्यं,
सदाहं वसामि भवदेव नित्यं।
एको हि रूपं ममतां प्रणेशं;
गुरुत्वं प्रणम्यं गुरुत्वं प्रणम्यं।।

ब्रह्मा स्वरूपं विष्णु स्वरूपं,
रुद्र स्वरूपं आत्मास्वरूपं।
ब्रह्मस्वरूपं चिन्त्यम् अचिन्त्यं;
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यं।।

न पूजा न ज्ञानं न ध्यानं न योगं,
ततो न विरक्तिः भवदेह देयं।
न जानामि मंत्रं न जानामि तंत्रं;
एको हि मंत्रं गुरुर्वै शरण्यं।।

हे गुरुदेव! आप पूर्णस्वरूप हैं, सदैव प्रणम्य हैं, एकात्म रूप से सर्वत्र व्याप्त हैं, मैं केवल आपकी ही शरण में हूं, आप ही ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र हैं, निर्विकार एवं साकार रूप आप ही हैं, आपको पुनः-पुनः प्रणाम करता हूं। मैं पूजा, ध्यान, योग, विरक्ति, कुछ भी तो नहीं जानता, मैं आपकी ही शरण में हूं, पुनः आपको प्रणाम करता हूं।

गुरु पूजन के पश्चात् महाकाली का पूजन प्रारम्भ करें।

ध्यान :

दोनों हाथ जोड़ कर भगवती महाकाली का ध्यान करें—

भीमा भमोग्रदंष्ट्राञ्जन गिरि विलस्तुल्य कान्ति दशास्यं,
त्रिंशलोलाक्षि माला दशलुलितभुजा पंक्ति पादांस्तथैव।
शूलं बाणं गदां वै धनुरथदधतीं शंख चक्रे भुशुण्डीं;
वन्दे काली कराग्रे परिधमसि युतातामसी शीर्षकञ्च।।

आवाहन :

ध्यान के बाद निम्नलिखित मंत्र से आवाहन करें—

आगच्छ वरदे देवि! दैत्यदर्पनिषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकर प्रिये।।

हे भगवती महाकाली! मैं आपका आवाहन कर रहा हूं, आप वरदा स्वरूपा हैं, समस्त दैत्य वंश का संहार करने वाली शंकर प्रिया हैं, पूजा में आकर मेरी पूजा को स्वीकार करें।

आसन :

आसन के लिए पुष्प चित्र के ऊपर चढ़ायें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

अनेक रत्न संयुक्तं नानामणि गणान्वितं।
मातःस्वर्णमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

अनेक दिव्य रत्न खचित, स्वर्ण निर्मित सिंहासन पर विराजमान होइए।

पाद्य :

चरण धोने के लिए निर्माल्य पात्र में आचमनी से जल लेकर छोड़ दें–

गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्धय संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।

हे मातः! आपके चरण धोने के लिए सुगन्धित जल प्रदान कर रहा हूं, इसे स्वीकार करें।

अर्घ्य :

दाहिने हाथ में जल लेकर, उसमें अक्षत एवं पुष्प मिलाकर निम्न मंत्र पढ़ें तथा देवी के सामने चढ़ा दें–

गन्ध पुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि! प्रसन्ना भव सर्वदा।।

हे भगवति! सुगन्धित पुष्प एवं अक्षत से युक्त अर्घ्य आपकी प्रसन्नता के लिए समर्पित कर रहा हूं, स्वीकार करें।

आचमन :

आचमन के लिए निर्माल्य पात्र में तीन आचमनी जल समर्पित करें—

सर्वतीर्थसमानीतं सुगन्धिं निर्मलं जलं।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।।

अनेक तीर्थों से एकत्र किया हुआ सुगन्धित एवं शुद्ध जल आचमन के लिए प्रस्तुत है।

स्नान :

स्नान के लिए कुछ जल यंत्र पर या निर्माल्य पात्र में छोड़ें—

जाह्नवी तोयमानीतं शुभं कर्पूर संयुतम्।
स्नापयामि महादेवि! तथा शान्तिं कुरुष्व मे।

कपूर आदि से सुगन्धित गंगाजल स्नान के लिए प्रस्तुत है, स्वीकार करें।

पंचामृत स्नान :

दूध, दही, घी, शहद और शक्कर मिलाकर स्नान करावें—

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतं।
पंचामृतं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

हे भगवति! आपके स्नान के लिए पंचामृत प्रदान कर रहा हूं, स्वीकार करें।

वस्त्र :

निम्न मंत्र पढ़कर वस्त्र समर्पित करें—

सर्वभूषादिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं गृह्यतां वाससी शुभे।।

हे भगवति! लौकिक मर्यादानुसार आपके शरीर के अनुकूल सुन्दर वस्त्र समर्पित कर रहा हूं, स्वीकार करें।

उपवस्त्र :

उपवस्त्र का अर्थ 'ऊपर ओढ़ने वाला वस्त्र', जिसे लोक भाषा में 'चुनरी' कहते हैं, चढ़ावें—

यमाश्रित्य महामाया जगत् संमोहिनी सदा।
तस्यै ते परमेशानि कल्पयाम्युत्तारीयकम्।।

जिस उत्तरीय वस्त्र को पहन कर आप समस्त जगत को सम्मोहित करती हैं, हे मातः! वैसा ही वस्त्र अपको समर्पित कर रहा हूं।

मधुपर्क :

मधु, घी एवं दही मिला कर समर्पित करें—

दधि मध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितं।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने।।

हे मातः! आपकी प्रसन्नता प्राप्ति के लिए मैं मधुपर्क प्रदान कर रहा हूं, इसे स्वीकार करें।

इत्र :

मधुपर्क के पश्चात् देवी की प्रसन्नता के लिए चित्र व यंत्र पर इत्र छिड़कें—

परमानन्द सौभाग्य परिपूर्ण दिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि।।

कुंकुम :

कुंकुम या रोली से तिलक करें—

कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनी काम संभवम्।
कुंकुमेनार्चिते देवि! प्रसीद परमेश्वरि।।

हे मातः! सौन्दर्य बढ़ाने वाला दिव्यतम यह कुंकुम आप स्वीकार करें तथा प्रसन्न हों।

आभूषण :

सोने या चांदी के गहने या इनके अभाव में अक्षत चढ़ावें—

स्वभाव सुन्दरांगार्थे नानाशक्त्याश्रिते शिवे।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते।।

हे भगवति! स्वाभाविक रूप से सुन्दर दिखाई देने वाले, अनेक प्रकार के विभिन्न अलंकार आपको पहनने के लिए प्रदान कर रहा हूं, स्वीकार करें।

सिन्दूर :

भगवती के मस्तक पर सिन्दूर का तिलक करें—

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुम सन्निभम्।
पूजितासि महादेवि! प्रसीद परमेश्वरि।।

जपा कुसुम के समान लाल वर्ण युक्त यह सिन्दूर आपकी प्रसन्नता के लिए समर्पित है, स्वीकार करें।

काजल :

यंत्र पर काजल अर्पित करें—

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्ति कारिके।
कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।।

कपूर की बत्ती से बने हुए, दोनों नेत्रों को शान्ति एवं सौन्दर्य प्रदान करने वाला काजल आपकी सेवा में प्रस्तुत है, स्वीकार करें।

सौभाग्य सूत्र :

जिसे मंगल-सूत्र भी कहा जाता है, भगवती को चढ़ावें—

सौभाग्य सूत्रं वरदे सुवर्णमणि संयुते।
कण्ठे बध्नामि देवेशि! सौभाग्यं देहि सर्वदा।।

हे मातः! यह स्वर्ण निर्मित सौभाग्य सूत्र आपको समर्पित है, जिससे मुझे सौभाग्य प्राप्ति हो।

गन्ध द्रव्य :

भगवती को सुगन्धित द्रव्य समर्पित करें—

चन्दनागरु कर्पूरं कुंकुमं रोचनं तथा।
कस्तूर्यादि सुगन्धाश्च सर्वांगेषु विलेपये।।

चन्दन, अगरु, कपूर, कुंकुम, गोरोचन, कस्तूरी आदि सुगन्धित द्रव्य आप को समर्पित हैं।

अक्षत :

कुछ चावल के दाने, जो टूटे हुए न हों, भगवती को समर्पित करें—

अक्षतान् धवलान् देवि! शालीयांस्तण्डुलांस्तथा।
अनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि।।

हे भगवति! आपकी पूजा के लिए यह अक्षत समर्पित है, आप स्वीकार करें।

पुष्पमाला :

अब भगवती को पुष्पमाला अर्पित करें—

पद्म शंखज पुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि।।

हे भगवति! पद्म, शंख तथा अनेक सुरुचिपूर्ण पुष्पों से निर्मित यह माला समर्पित है, आप प्रसन्न हों।

बिल्व पत्र :

बिल्व पत्र को चढ़ाते हुए मंत्र को बोलें—

अमृतोद्भव श्रीवृक्षः महादेवि! प्रियः सदा।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि।।

पवित्र बिल्ववृक्ष से निकले हुए ये बिल्व पत्र आपको समर्पित हैं, आप प्रसन्न हों।

धूप :

श्रेष्ठ गन्ध युक्त धूप या अगरबत्ती दिखावें—

दशांगं गुग्गुलं धूपं चन्दनागरु संयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्।।

गुग्गुल, चन्दन तथा अगरु आदि सुगन्धित द्रव्य से बना हुआ यह धूप मैं समर्पित कर रहा हूं, हे भगवति! आप इसे स्वीकार करें।

दीप :

घी का दीपक जलावें तथा भगवती को दिखावें—

घृतवर्ति समायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलं।
दीपं दास्यामि देवेशि! सुप्रीता भव सर्वदा।।

हे भगवति! अति तेज युक्त, अति सुन्दर घी का प्रज्वलित दीप आपको समर्पित कर रहा हूं, स्वीकार करें।

नैवेद्य :

किसी पात्र में सुस्वादु भोजन सजाकर भगवती को भोग लगावें—

शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमं।
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

हे मातः! आपकी प्रसन्नता के लिए स्वादिष्ट भोजन प्रस्तुत है, स्वीकार करें।

फल :

अनेक प्रकार के फल थाली में सजाकर भगवती के सामने चढ़ावें—

इदं फलं मया देवि! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिः प्रसन्ना भव सर्वदा।।

हे भगवति! विभिन्न ऋतु फल आपके लिए समर्पित हैं, इन्हें ग्रहण कर प्रसन्न होइए।

आचमन :

निम्न संदर्भों को बोलते हुए पांच आचमनी जल छोड़ दें—

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।

ताम्बूल :

पान के पत्ते पर लौंग, इलायची रख कर यंत्र पर चढ़ावें—

पूगीफलं महद्दिव्यं नाग वल्ली दलैर्युतम्।
एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

इलायची तथा लौंग युक्त पान आपको मुख शुद्धि हेतु समर्पित कर रहा हूं।

दक्षिणा द्रव्य :

भगवती को द्रव्य के रूप में दक्षिणा समर्पित करें—

हिरण्य गर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्य फलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

हे भगवति! यह दक्षिणा द्रव्य आपके चरणों में समर्पित है, स्वीकार करें।

नीराजन :

पांच बत्ती बनाकर आरती करें—

नीराजनं सुमंगल्यं कर्पूरेण समन्वितं।
चन्द्रार्कवह्नि सदृशं महादेवि! नमोऽस्तुते।।

कपूर से युक्त मंगलप्रद सूर्य और चन्द्रमा के समान यह आरती आप के लिए समर्पित है।

प्रदक्षिणा :

भगवती के चारों ओर तीन बार परिक्रमा करने की भावना करें—

नमस्ते देवि! देवेशि! नमस्ते ईप्सितप्रदे।
नमस्ते जगतांधात्रि नमस्ते भक्तवत्सले।।

भक्तों को ईप्सित प्रदान करने वाली, समस्त संसार को धारण करने में समर्थ, आपको मेरा बारम्बार नमस्कार है।

नमस्कार :

दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करें—

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः।।

हे भगवति! संसार का हित करने वाली, समस्त संसार की आधार स्वरूपा आपको मेरा बारम्बार नमस्कार है।

इसके बाद किसी प्लेट में रक्त चन्दन से 'क्रीं' बीज अंकित करें तथा उस पर प्राण-प्रतिष्ठित 'महाकाली यंत्र" को स्थापित करके यन्त्र पूजा आरंभ करें—

विनियोग :

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें—

ॐ अस्य श्री महाकाली मंत्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, कालिका देवता, क्रीं बीजम्, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकं मम अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

जल भूमि पर छोड़ दें।

ऋष्यादि न्यास :

निम्न संदर्भों को बोलकर विभिन्न अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करें—

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि।	सिर को स्पर्श करें।
उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे।	मुख को स्पर्श करें।
दक्षिणा कालिका देवतायै नमः हृदि।	हृदय को स्पर्श करें।
क्रीं बीजाय नमः गुह्ये।	गुह्य प्रदेश को स्पर्श करें।
हूं शक्तये नमः पादयोः।	पैरों को स्पर्श करें।
क्रीं कीलकाय नमः नाभौ।	नाभि को स्पर्श करें।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।	सभी अंगों को स्पर्श करें।

कर न्यास :

ॐ क्रां अंगुष्टाभ्यां नमः।

ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ क्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

अंग न्यास :

ॐ क्रां हृदयाय नमः।

ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा।

ॐ क्रूं शिखायै वषट्।

ॐ क्रैं कवचाय हुम्।

ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

वर्ण न्यास :

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं नमः। इति हृदये।

एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः। इति दक्षिण बाहौ।

ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः। इति वाम बाहौ।

णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः। इति दक्षिण पादे।

मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं नमः। इति वाम पादे।

ध्यान :

दोनों हाथ जोड़ कर भगवती काली का ध्यान करें—

ॐ शवारूढ़ां महाभीमां घोर दंष्ट्रां हसन्मुखीम्,
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्।
मुण्डमालाधरां देवीं लोलजिह्वां दिगम्बराम्;
एवं चिन्तयेत् कालीं श्मशानालय वासिनीम्।।

शवासन पर बैठी हुई, दीर्घदन्ता, भयंकर अट्टहास करने वाली,

चार भुजाओं से युक्त, खड्ग, मुण्ड धारण करने वाली, वर और अभयदात्री, दिगम्बरा, मुण्ड माला धारण की हुई, लम्बी जीभ बाहर की हुई, श्मशान की भूमि में रहने वाली भगवती देवी को मैं नमस्कार करता हूं।

नव पीठ शक्ति पूजन :

इस ध्यान के पश्चात् भगवती का मानसिक पूजन करें, फिर महाकाली यंत्र पर लाल रंग के पुष्प की पंखुड़ियां चढ़ाते हुए 'नव पीठ शक्तियों' का पूजन मंत्रोच्चार के साथ करें—

ॐ जयायै नमः।
ॐ विजयायै नमः।
ॐ अजितायै नमः।
ॐ अपराजितायै नमः।
ॐ नित्यायै नमः।
ॐ विलासिन्यै नमः।
ॐ दोग्ध्र्यै नमः।
ॐ अघोरायै नमः।
ॐ मंगलायै नमः।

आवरण पूजा :

दोनों हाथों में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ संविन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये।
अनुज्ञां कालिके देहि परिवारार्चनाय मे।।

तत्पश्चात् पुष्प यंत्र पर चढ़ा दें और आवरण पूजा आरम्भ करें।

प्रथमावरणार्चन :

रक्त चन्दन से रंगें हुए अक्षत को बायें हाथ में लेकर दाहिने

हाथ से यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्रोच्चार करें—

ॐ क्रां हृदयाय नमः।

हृद्देवता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा।

शिरोदेवता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ क्रूं शिखायै वषट्।

शिखा देवता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ क्रैं कवचाय हुं।

कवच देवता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

नेत्र देवता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

अस्त्र देवता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

प्रथमावरण पूजा के बाद पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

यह पढ़कर पुष्पांजलि को यंत्र पर चढ़ावें।

द्वितीयावरणार्चन :

द्वितीय आवरण की पूजा हेतु बायें हाथ में हल्दी व कुंकुम से रंगे अक्षत ले लें और दाहिने हाथ से यंत्र पर अर्पित करें—

ॐ काल्यै नमः।

काली श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ कपालिन्यै नमः।

कपालिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ कुल्लायै नमः।

कुल्ला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ कुरुकुल्लायै नमः।

कुरुकुल्ला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ विरोधिन्यै नमः।

विरोधिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ विप्रचित्तायै नमः।

विप्रचित्ता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

पुष्पांजलि यंत्र पर चढ़ा दें।

तृतीयावरणार्चन :

बायें हाथ में नौ (९) बिल्व पत्र ले लें और निम्न मंत्रोच्चारण करते हुए एक-एक पत्र यंत्र पर चढ़ावें—

ॐ उग्रायै नमः।

उग्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ उग्रप्रभायै नमः।

उग्रप्रभा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ दीप्तायै नमः।

दीप्ता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ नीलायै नमः।

नीला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ घनायै नमः।

घना श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ बलाकायै नमः।

बलाका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ मात्रायै नमः।

मात्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ मुद्रायै नमः।

मुद्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ मित्रायै नमः।

मित्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर यंत्र पर चढ़ावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

चतुर्थावरणार्चन :

किसी पात्र में जल लेकर उसमें कुंकुम मिला लें और दोनों हाथों में पात्र को पकड़कर निम्न मंत्रोच्चारण के साथ जल यन्त्र पर अर्पित करें–

ॐ ब्राह्मयै नमः।

ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ नारायण्यै नमः।

नारायणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ माहेश्वर्यै नमः ।

माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ चामुण्डायै नमः ।

चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कौमार्यै नमः ।

कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अपराजितायै नमः ।

अपराजिता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ वाराह्यै नमः ।

वाराही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ नारसिंह्यै नमः ।

नारसिंही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

तदुपरान्त अंजलि में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ।।

इस मंत्र को पढ़कर पुष्पाञ्जलि यंत्र पर समर्पित करें ।

पंचमावरणार्चन :

बायें हाथ में काली मिर्च के दाने ले लें और दाहिने हाथ से यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र बोलें—

ॐ ऐं ह्रीं अं असितांग भैरवाय नमः ।

असितांग भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं इं रुरु भैरवाय नमः ।

रुरु भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं उं चण्ड भैरवाय नमः ।

चण्ड भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं ऋं क्रोध भैरवाय नमः।

क्रोध भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं लृं उन्मत्तभैरवाय नमः।

उन्मत्त भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं एं कपालि भैरवाय नमः।

कपालि भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं ओं भीषण भैरवाय नमः।

भीषण भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं अं संहार भैरवाय नमः।

संहार भैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

षष्ठावरणार्चनः

थोड़े से लौंग बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से यंत्र पर निम्न मंत्र बोलते हुए चढ़ायें —

ॐ श्री भैरव्यै नमः।

श्री भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ मं महा भैरव्यै नमः।

महा भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ सिं सिंह भैरव्यै नमः।

सिंह भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ धूं धूम्र भैरव्यै नमः।

धूम्र भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ भीं भीम भैरव्यै नमः।

भीम भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ उं उन्मत्त भैरव्यै नमः।

उन्मत्त भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वं वशीकरण भैरव्यै नमः।

वशीकरण भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ मों मोहन भैरव्यै नमः।

मोहन भैरवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

मंत्र जप

आवरण पूजन के पश्चात् मूल मंत्र का ''काली हकीक माला'' से एक माला मंत्र-जप सम्पन्न करें—

।।ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं महाकालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।।

महाकाली कवच :

मंत्र-जप के बाद इस कवच का पाठ करें—

शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा,
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी।
हूं हूं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुति द्वयं,
महाकालिके पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरि।।

क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम्,
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी।
द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्याखिलप्रदा;
खड्ग मुण्ड धरा काली सर्वांगममभितोऽवतु।।

क्रीं हूं हीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम,
ऐं हूं ॐ ऐं स्तन द्वन्द्वं हीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम्।
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका;
क्रीं क्रीं हूं हूं हीं हीं पातु करौ षडक्षरी मम।।

क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकेऽवतु,
क्रीं स्वाहा पातु पृष्टं च कालिका सा दशाक्षरी।
क्रीं मे गुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः;
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतंत्रेषु गोपिता।।

हीं हीं दक्षिणे कालिके हूं हूं पातु कटिद्वयम्।
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहान्ता चोरुयुग्मकम्।।

ओं हीं क्रीं मे स्वाहा पातु जानुनी कालिका सदा।
काली हृन्नामविधेयं चतुर्वर्गफल प्रदा।।

क्रीं हूं हीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु।
क्रीं हूं हीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम।।

खड्ग मुण्ड धरा काली वरदाभय धारिणी,
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वांगमभितोऽवतु।

काली कपालिनी कुरुला कुरु कुल्ला विरोधिनी।
विपचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता धनत्विषः।।

नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रा मिता च माम्।
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषणाः।।

रक्षन्तु मां दिग्विदिक्षु ब्राह्मी नारायणी तथा।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता।।

वाराही नारसिंही च सर्वाश्रया विभूषणा।
रक्षन्तु स्वायुधेर्दिक्षु दशकं मां यथा तथा।।

इस कवच के पाठ से तीनों लोकों का मोहन एवं वशीकरण किया जा सकता है तथा साधक पुत्रवान्, धनवान् एवं सभी विद्याओं से पूर्ण हो जाता है।

।।इति सिद्धिम्।।

अनमोल धरोहर

पूज्यपाद गुरुदेव के वाणी में अटूट ज्ञान का संग्रह . . . **"तमसो मा ज्योतिर्गमय"** . . . की यात्रा . . . जिसके सुनने मात्र से जीवन में आनन्द व्याप्त होने लगता है . . . जीवन के रहस्य को उजागर करता हुआ, अद्वितीय संग्रह . . . सिर्फ आपके लिए ही नहीं अपितु आपकी आने वाली पीढ़ियों के लिए संजोकर रखने वाली अमूल्य धरोहर है . . .

नवीनतम कैसेट्स

(जो नये रूप में अभी-अभी तैयार हुई हैं।)

गुरु वाणी
गुरु बिन रह्यो न जाय
ध्यान योग
तन्त्र रहस्य
कायाकल्प
गुरु हमारी जाति है
गुरु हृदय स्थापन प्रयोग
साधना सूत्र
महालक्ष्मी साधना
ॐ मणि पद्मे हुं
सांस सांस में गुरु बसे
गुरु पूजन
अष्ट सिद्धि
अक्षय पात्र साधना
ध्यान, धारणा और समाधि

और ये दिव्यतम कैसेट्स . . .

शिव सूत्र
शिव पूजन
पराविज्ञान
संध्या आरती
पारद विज्ञान
पूर्णत्व सिद्धि
राजयोग दीक्षा
निखिल स्तवन
लक्ष्मी मेरी चेरी
पूर्णत्व ब्रह्म दीक्षा
कुण्डलिनी योग
कालज्ञान प्रयोग
कालज्ञान विवरण
दुर्लभ गुरु भजन
हिप्नोटिज्म रहस्य
गुरु साधना चिन्तन
ब्रह्माण्ड भेदन प्रयोग
प्राणतत्त्व जागरण प्रयोग
षोडशी त्रिपुर साधना
पारदेश्वरी लक्ष्मी प्रयोग
मनोकामना पूर्ति प्रयोग
पूर्ण पौरुष प्राप्ति प्रयोग
सशरीर सिद्धाश्रम प्राप्ति प्रयोग
पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (३ भाग)
निखिलेश्वर महोत्सव (६ भाग)
मैं खो गया तुम भी खो जाओ
मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं
सहस्राक्षी लक्ष्मी विवेचना एवं प्रयोग
शरीरस्थ देवता स्थापित सिद्धि प्रयोग
मनोकामना पूर्ति प्रयोग एवं गुरु पूजन
पारदेश्वर शिवलिंग पूजन तथा रसेश्वरी दीक्षा

ऑडियो कैसेट प्रति – ३०/-

(डाक व्यय 24/- अतिरिक्त)

5 कैसेट्स से अधिक कैसेट्स मंगाने पर डाक व्यय संस्था वहन करेगी।

सम्पर्क

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली, फोन : 011-7182248, फेक्स: 011-7196700

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां
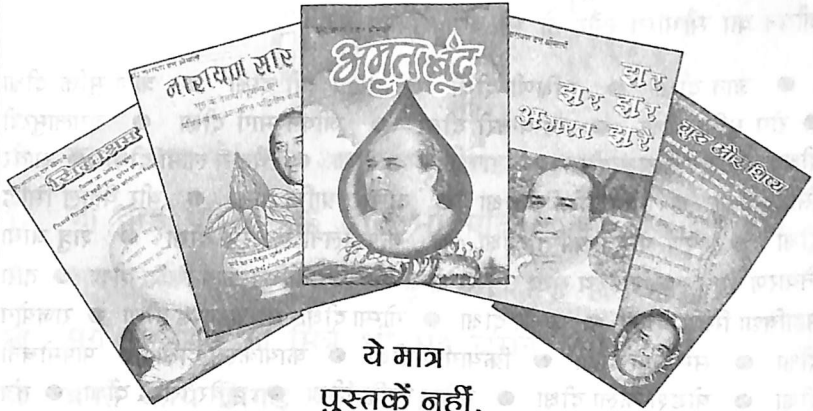
ये मात्र
पुस्तकें नहीं,
गुरुदेव की ज्ञान साधना के सारभूत तथ्य हैं,
समुद्र मंथन के पश्चात् जिस प्रकार से अमृत कलश निकला था,
ठीक उसी प्रकार गुरुदेव के चिन्तन, मनन, ज्ञान, साधना
और सिद्धियों के मंथन से जो अमृत घट-ग्रंथ निकले हैं,
वे नीचे प्रस्तुत हैं, जो कि प्रत्येक साधक, शिष्य और व्यक्ति के
लिए अनमोल हैं, दुर्लभ हैं, अद्वितीय हैं और सुनहरे अंकों में
भाग्योदय हेतु लिखने और मनन करने योग्य हैं . . .

नारायण तत्त्व	10/-	अमृत बूंद	60/-
सिद्धाश्रम	10/-	झर झर झर अमरत झरै	30/-
गुरु और शिष्य	10/-	लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
दीक्षा संस्कार	15/-	भौतिक सफलता	
गुरु सूत्र	30/-	साधना एवं सिद्धियां	96/-

सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फैक्स : 7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0), फोन : 0291-32209, फैक्स : 32010
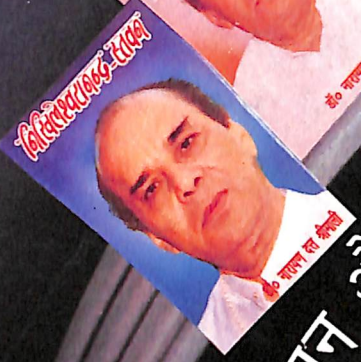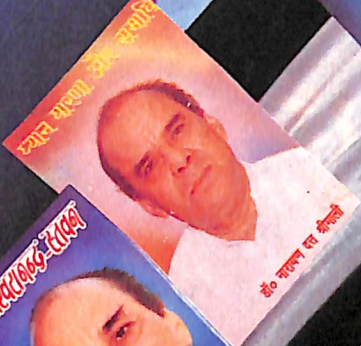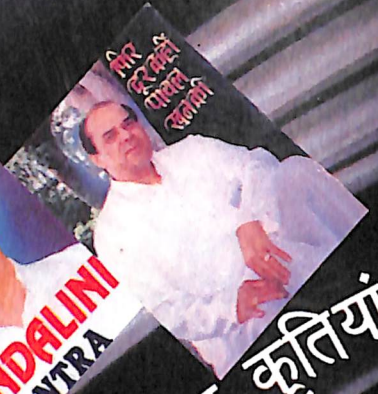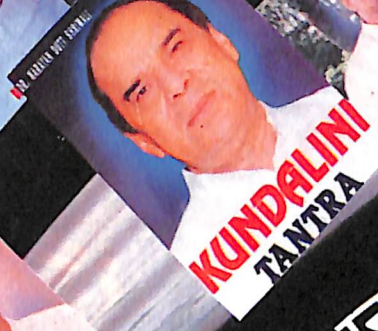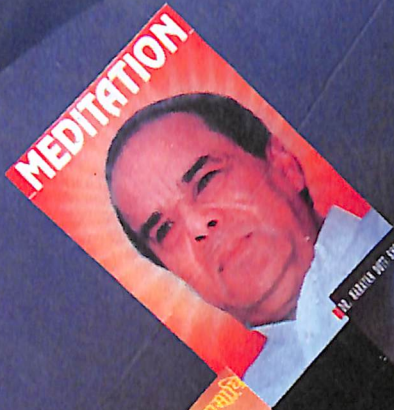
MEDITATION
KUNDALINI TANTRA
ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां
पूज्यपाद गुरुदेव
"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"
द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ . . .
हिन्दी साहित्य
कुण्डलिनी नाद ब्रह्म 96/-
फिर दूर कहीं पायल खनकी 96/-
ध्यान, धारणा और समाधि 96/-
निखिलेश्वरानन्द स्तवन 96/-
सर्व सिद्धि प्रदायक यज्ञ-विधान 15/-
आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र 30/-
महालक्ष्मी साधना एवं सिद्धि 30/-
स्वर्ण तंत्रम् 30/-
विश्व की अलौकिक साधनाएं 30/-
लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग 30/-
मुहूर्त ज्योतिष 30/-
भौतिक सफलताएं, साधनाएं एवं सिद्धियां 30/-
हिमालय का सिद्ध योगी 35/-
गुरु सूत्र 20/-
अंग्रेजी साहित्य
Meditation 240/-
Kundalini Tantra 240/-
The Sixth Sense 240/-
: प्राप्ति स्थान :
सिद्धाश्रम,306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700